



BACKGROUNDEERS
Press Information Bureau
Government of India

भारत - संपूर्ण एआई जगत का मिलन स्थल

भारत मंडपम में वैश्विक सहयोग का प्रदर्शन

AI IN INDIA
FROM VISION TO IMPACT

20 फरवरी, 2026

नई दिल्ली में फरवरी की एक सुहावनी सुबह में, भारत मंडपम के कांच का अग्रभाग केवल सूर्य की रोशनी को ही नहीं, बल्कि संभावनाओं को भी प्रतिबिंबित करता है। इसके भीतर, तेरह देशों के मंडप एक विशाल चाप में खड़े हैं, जिनमें से प्रत्येक अपने इरादे का प्रतीक है। ऑस्ट्रेलिया, जापान, रूस, यूनाइटेड किंगडम, फ्रांस, जर्मनी, इटली, नीदरलैंड, स्विट्जरलैंड, सर्बिया, एस्टोनिया, ताजिकिस्तान और एक सामूहिक अफ्रीकी मंडप, सभी अपने विचारों, निवेशों और महत्वाकांक्षाओं के साथ यहां पहुंचे हैं। यही इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026 का मुख्य आकर्षण है। दुनिया सिर्फ इसमें भाग लेने नहीं आई है, बल्कि सहयोग करने आई है।



16 से 21 फरवरी 2026 तक, इंडिया एआई इम्पैक्ट एक्सपो भी इस समिट के साथ-साथ आयोजित किया जा रहा है, जो दस स्थानों और **70,000 वर्ग मीटर** से अधिक क्षेत्रों में फैला हुआ है। वैश्विक प्रतिनिधि, प्रौद्योगिकी क्षेत्र के अग्रणी, अनुसंधानकर्ता और छात्र संवाद एवं प्रदर्शन के लिए डिजाइन किए गए विशाल हॉलों में विचरण करते हैं। लोगों की अत्यधिक रुचि को देखते हुए, भारत सरकार ने प्रदर्शनी को एक दिन और बढ़ाकर शनिवार, 21 फरवरी को जनता के लिए खुला रखा है, ताकि सभी को अधिक सुविधापूर्ण अनुभव मिल सके। यह सरल लेकिन महत्वपूर्ण कदम है। यह कोई बंद कमरे में होने वाली बातचीत नहीं है। यह एक सार्वजनिक क्षण है।

इन सबके केंद्र में सभ्यतागत आत्मविश्वास पर आधारित एक विचार निहित है: 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' यानी सभी का कल्याण, सभी की खुशी। अपने उद्घाटन भाषण में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए भारत का आदर्श है। उन्होंने विविधता, जनसंख्या और लोकतंत्र को भारत की स्थायी शक्तियों के रूप में बताया। उन्होंने कहा कि भारत में सफल होने वाला कोई भी एआई मॉडल वैश्विक स्तर पर लागू किया जा सकता है। इसके बाद आमंत्रण का स्थान है। भारत में डिजाइन और विकास करें। दुनिया को सौंपें। मानवता को सौंपें। ये शब्द हॉल से कहीं दूर तक गूंजते हैं।

तेरह देशों के मंडप उन शब्दों को एक अलग रूप देते हैं। **फ्रेंच पवेलियन**, राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन और प्रधानमंत्री मोदी के दौर पर, 29 कंपनियों ने फ्रांस की तकनीकी श्रेष्ठता का प्रदर्शन किया। यह दौरा भारत-फ्रांस नवाचार वर्ष की ऊर्जावान शुरुआत का प्रतीक है। राष्ट्रपति मैक्रॉन ने खुलकर प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि भारत ने वह हासिल किया है जो किसी अन्य देश ने नहीं किया है। **1.4 बिलियन लोगों** की एक डिजिटल पहचान, हर महीने **20 अरब लेनदेन** की एक भुगतान प्रणाली, एक स्वास्थ्य सुविधा को लेकर **500 मिलियन डिजिटल हेल्थ आईडी जारी करना कोई छोटी उपलब्धि नहीं है**। उन्होंने श्रोताओं को याद दिलाया कि यह इंडिया स्टैक है। खुला, अंतरसंचालनीय और संप्रभु। उन्होंने कहा कि हम एक अभूतपूर्व गति के आरंभ में हैं।



कुछ ही कदम की दूरी पर, **एस्टोनिया के पवेलियन** में लगातार भीड़ उमड़ती है। अपने डिजिटल शासन मॉडल के लिए प्रसिद्ध एस्टोनिया को यहां काफी समर्थन मिलता है। राष्ट्रपति अलार कारिस का कहना है कि डिजिटल सार्वजनिक इंफ्रास्ट्रक्चर अब केवल एक तकनीकी आधारशिला नहीं रह गई है। यह आधुनिक राज्यों के संचालन की नींव है। जब इन प्रणालियों में एआई को शामिल किया जाता है, तो एल्गोरिथम पारदर्शिता और मानवीय निगरानी

सार्वजनिक विश्वास के लिए आवश्यक शर्तें बन जाती हैं। उनके शब्द नैतिकता और जवाबदेही पर होने वाली चर्चाओं में गूँजते हैं। यहां सहयोग केवल एक अमूर्त अवधारणा नहीं है, बल्कि यह एक ढांचागत अवधारणा है।



स्लोवाकिया के राष्ट्रपति पीटर पेलेग्रिनी एक व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। उनका कहना है कि भारत दुनिया को एक महत्वपूर्ण सच्चाई दिखाता है। प्रौद्योगिकी को बड़े पैमाने पर विकसित किया जा सकता है और यह आम लोगों की मदद कर सकती है। स्लोवाकिया भले ही छोटा देश हो, लेकिन वह तेजी से प्रगति कर सकता है। वह व्यावहारिक परिणाम चाहता है। फिनलैंड के प्रधानमंत्री पेटेरी ओर्पो शिखर सम्मेलन को समयोचित बताते हैं। उनका कहना है कि दुनिया को जिम्मेदार एआई के लिए साझा समझ, सामान्य नियमों

और राजनीतिक इच्छाशक्ति की तत्काल आवश्यकता है। स्विट्जरलैंड के राष्ट्रपति गाय पार्मेलिन समावेशी संवाद और बहुपक्षीय सहयोग की बात करते हैं। उनका जोर है कि जिम्मेदार एआई नवाचार में बाधा नहीं डालता, बल्कि उसे बढ़ावा देता है। वे आगे कहते हैं कि भारत और स्विट्जरलैंड महत्वाकांक्षा और कार्यान्वयन के बीच एक सेतु का निर्माण कर रहे हैं।

ये सभी विचार सात विषयगत चक्रों में समाहित हैं जो एकसपो को संगठित करते हैं: मानव पूंजी, सामाजिक सशक्तिकरण के लिए समावेशन, सुरक्षित और विश्वसनीय एआई, अनुकूलन, नवाचार और दक्षता, विज्ञान, एआई संसाधनों का लोकतंत्रीकरण, आर्थिक विकास और सामाजिक हित के लिए एआई। ये चक्र लोग, धरती और प्रगति को ठोस कार्यक्षेत्रों में रूपांतरित करते हैं। प्रतिनिधिमंडल इनके बीच भ्रमण करते हैं और अनुसंधान प्रयोगशालाओं, स्टार्टअप और सार्वजनिक संस्थानों के बीच अंतर्संबंधों की पड़ताल करते हैं। चर्चाएं कंप्यूटिंग क्षमता से लेकर कक्षा के माध्यम से कौशल विकास तक, डेटा प्रबंधन से लेकर हरित ऊर्जा ग्रिड तक के विषयों पर केंद्रित होती हैं।

अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन का पवेलियन एक नया आयाम प्रस्तुत करता है। यह ऐसे व्यावहारिक मॉडल प्रदर्शित करता है जहां कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), डिजिटल प्लेटफॉर्म और भू-स्थानिक उपकरण बिजली कंपनियों का आधुनिकीकरण करते हैं और नवीकरणीय ऊर्जा के एकीकरण को गति देते हैं। ऊर्जा के लिए एआई पर वैश्विक मिशन एक संयोजन बिंदु के रूप में उभरता है। सौर ऊर्जा के प्रसार के क्रम में डिजिटल



बुद्धिमत्ता की भूमिका होती है। तत्क्षण अनुकूलन स्मार्ट ग्रिड प्रबंधन से जुड़ता है। यह सहयोग तकनीकी है, लेकिन इसके प्रभाव सामाजिक हैं। सदस्य देशों में ऊर्जा की पर्याप्तता एक साझा लक्ष्य बन जाता है।

दस क्षेत्रों में फैले वैश्विक प्रौद्योगिकी फर्म, स्टार्टअप, शिक्षाविद, केंद्रीय मंत्रालय, राज्य सरकारें और अनुसंधान संस्थान क्षमताओं का एक अनूठा संगम प्रस्तुत करते हैं। इसका व्यापक दायरा स्पष्ट है। फिर भी, प्रतिस्पर्धा की बजाय सहयोगात्मक माहौल बना हुआ है। बहुपक्षीय संस्थानों और राजनीतिक नेताओं की उपस्थिति शिखर सम्मेलन के महत्व को दर्शाती है। यह केवल एक व्यापार मेला नहीं है। यह एक निर्णायक मंच है जो यह निर्धारित करता है कि परस्पर जुड़ी दुनिया में एआई का संचालन और उपयोग कैसे किया जाएगा।

जैसे-जैसे शिखर सम्मेलन आगे बढ़ता है, पवेलियन राष्ट्रीय परिसरों की बजाय खुली प्रयोगशालाओं की तरह लगने लगते हैं। प्रतिनिधि डेटा मानकों पर चर्चा करते हैं। अनुसंधानकर्ता नैतिक ढाँचों पर विचार-विमर्श करते हैं। उदयमी सह-विकास की बात करते हैं। विस्तारित अवकाश का दिन परिवारों, छात्रों और युवा नवप्रवर्तकों को भी इसमें शामिल करता है। सावधानी की जगह जिज्ञासा हावी हो जाती है। अंतरराष्ट्रीय माहौल भारत की उपस्थिति को कमजोर नहीं करता, बल्कि उसे और भी मजबूत बनाता है।

इससे भारत की एक ऐसी छवि उभरती है जो मेजबान होने के साथ-साथ एक शक्तिशाली देश भी है। एक ऐसा देश जो अपने डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर को लेकर आश्वस्त है। एक ऐसा राष्ट्र जो अपने संसाधनों को साझा करने और दूसरों से सीखने के लिए तत्पर है। एक ऐसा मंच जहां संप्रभु महत्वाकांक्षा वैश्विक जवाबदेही के साथ-साथ चलती है। तेरह पवेलियन इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि एआई युग में सहयोग अब वैकल्पिक नहीं बल्कि मूलभूत आवश्यकता है।

भारत मंडपम पर शाम की रोशनी फैलते ही, कांच का अग्रभाग एक अलग ही चमक बिखेरता है। यह संवाद की चमक है। प्रगति पर चल रहे समझौतों की चमक है। उन साझेदारियों की चमक है जिन पर अभी हस्ताक्षर होने बाकी हैं।

इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026 का समापन किसी अंतिम पड़ाव के साथ नहीं, बल्कि प्रगति के साथ हुआ है। बातचीत में एक संदेश स्पष्ट है। दुनिया को भारत में न केवल एक बाजार मिला है, बल्कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के भविष्य को आकार देने में एक भागीदार भी मिला है।

संदर्भ:

- <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2229727®=3&lang=2>
- <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2230198®=3&lang=1>

पीआईबी शोध

पीके/केसी/एसकेएस